स्वराज्याधिकारी मास

मन का मालिक – 3

15.10.2017

1. **स्वमान** - मैं श्रेष्ठ महान संकल्पों में रमण करने वाली महावीर महारथी आत्मा हूँ।

-``इस मरजीवे जन्म का खजाना कहो वा विशेष एनर्जी कहो, वह है ही - संकल्प। मरजीवे बनने का आधार ही शुद्ध संकल्प है मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, बस संकल्प ने कौड़ी से हीरे तुल्य बना दिया न। मैं कल्प पहले वाला बाबा का बच्चा हूं, वारिस हूा, अधिकारी हूँ, इस संकल्प ने मास्टर सर्वशक्तिमान बनाया। तो खजाना भी यही है, एनर्जी भी यही तो संकल्प भी यही है।`` **– बापदादा**

2. **योगाभ्यास** –

अ. मैं महावीर महारथी अर्थात् मुख द्वारा महावाक्य उच्चारण करने वाली, बुद्धि द्वारा सिद्धि स्वरुप संकल्प करने वाली आत्मा हूँ...मैं भक्तों का इष्ट हूँ...भक्तात्मायें मेरे आशीर्वाद के दो बोल सुनने के लिये आतुर रहते हैं...मेरे संकल्प और बोल साधारण नहीं हैं, बल्कि दिव्य व वरदानी हैं...मैं अपने श्रेष्ठ संकल्पों व अमृतवाणी से सबका कल्याण कर रहा हूँ...सबको एक बाबा से जोड़ रहा हूँ...।

ब. मुझ आत्मा का हर संकल्प रुपी बीज सफलता सम्पन्न है...सर्व शक्तिमान की सर्व शक्तियों की किरणें निरंतर ऊपर से मुझ पर आ रही हैं और मुझ में समा रही हैं...जिससे मेरा हर संकल्प समर्थ और सिद्ध हो रहा है... ।

स. **सकाश** – दिन में कम से कम दो बार अपने मास्टर ज्ञान सूर्य स्वरुप में स्थित होकर सारे संसार को सुख, शांति व शक्ति की सकाश दें...।

3. **धारणा – दृढ़ता**

–``पहले तो दृढ़ संकल्प का मन में दीप जलाओ कि अब से दृढ़ता द्वारा सफलता को पाना ही है। देखेंगे, पता नहीं, ये नहीं। होना ही है। **'गे'** शब्द नहीं। जैसे हर वर्ष अपने सर्विस के प्लॉन बनाते हो, वैसे हर वर्ष में अपनी चढ़ती कला वा संपूर्ण बनने का वा श्रेष्ठ संकल्प वा कर्म का भी अपने आप के लिए प्लॉन बनाओ और प्लॉन के साथ हर समय प्लॉन को सामने देखते हुए प्रैक्टिकल में लाते जाओ।`` **– शिवभगवानुवाच**

4. **स्वचिंतन** – सारे दिन मैं स्व और सर्व प्रति व्यर्थ व नेगेटिव संकल्पों से कितना मुक्त रहता हूँ? श्रेष्ठ व समर्थ संकल्प कितने रहते हैं? ? इसकी प्रतिशत निकालें और श्रेष्ठ व समर्थ संकल्पों की प्रतिशत बढ़ाने का प्लॉन बनायें।

5. **स्वराज्याधिकारियों प्रति** – प्रिय स्वराज्याधिकारियों! संकल्प ही इस जीवन को ऊंचा उठाने या नीचे लाने का सूक्ष्म और अति सशक्त साधन है। बाबा की बच्चों के प्रति समय प्रमाण यही श्रीमत है कि संकल्प की गति अति तीव्र ना बनाओ। समर्थ की संख्या स्वतः ही कम लेकिन शक्तिशाली होती है और व्यर्थ की संख्या ज्यादा और प्राप्ति शून्य। संकल्प की गति अति तीव्र होना, यह भी भाग्य की एनर्जी को वेस्ट करना है। तो आयें, संकल्पों को ज्ञान खजाने से श्रेष्ठ और महान बनाकर अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य का निर्माण करें।